© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2022

पुस्तकालयों में संसाधनों और सेवाओं के उपयोग पर एक लघु अध्ययन

[1]Poonam Rani, [2]Prof.(Dr.) Yogesh Kumar Atri

Department of Library Science

OPJS University, Churu Rajasthan (India)

सार

पुस्तकालय वह स्थान हैं जहाँ विविध प्रकार की पुस्तकें पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, पॉडुलिपियां फिल्में नक्शे, प्रिंट, दस्तावेज ई–किताबें ऑडियों, पुस्तकों, डेटाबेस आदि का संग्रह रहता हैं। लाइब्रेरी शब्द की उत्पत्ति लेटिन शब्द लाइवर से हुई जिस का अर्थ हैं, पुस्तक। पुस्तकालय एक सामाजिक जन संस्था है जो निरंतर समाज कल्याण में रहते हुए ज्ञानी और अज्ञानी को समान रूप से ज्ञान वितरित करती हैं। यह एक सेवाभावी संस्था है और जन–जन की बौद्धिक क्षुधा को शान्त करने का सक्षम साधन हैं। पुस्तकालय और समाज को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता पुस्तकालय मानवता के विकास की आधारशिला हैं। किसी भी देश की संस्कृति तथा सभ्यता उसके पुस्तकालय में सुरक्षित रहती हैं। पुस्तकालय बौद्धिक, सांस्कृतिक, मानसिक आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता हैं। पुस्तकालय किसी भी देश की संस्कृति आन्दोलन का प्रमुख स्रोत होता हैं। अतः प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में पुस्तकालय का विशेष स्थान होता हैं। पुस्तकालय शिक्षा व्यवस्था का एक क्रियाशील एवं महत्त्वपूर्ण अंग होता हैं। सदियों से सृजित ज्ञान पुस्तकालय में धीरे–धीरे संचित होता रहता हैं इसलिए पुस्तकालय को संग्रहित ज्ञान का भण्डार कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। पुस्तकालय के निर्माण एवं विकास में समाज का अपार धन व्यय किया जाता हैं एवं समाज के ही सदस्यों द्वारा ज्ञान के संसाधनों एवं पुस्तकालयों की सेवाओं का उपयोग किया जाता हैं।

मुख्य शब्दः– पुस्तकालय, संसाधन और सेवाएं।

पुस्तकालयों में संसाधनों और सेवाओं के उपयोग

अनुसंधान में पुस्तकालय का योगदान

शोध एवं अनुसंधान के क्रियाकलापों को समर्थन देना पुस्तकालयों का एक अन्य महत्वपूर्ण दायित्व है। अनुसंधान की सफलता एवं पूर्णता के लिए उपलब्ध ज्ञान एवं सूचना की प्राप्ति एवं जानकारी अति आवश्यक होती है। नवीनतम ज्ञान को मुख्यतः पत्रिकाओं, अनुसंधान प्रतिवेदनों तथा अन्य ऐसे प्रकाशनों के माध्यम से संप्रेषित तथा प्रसारित किया जाता है। अतः शोध की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने के लिए सभी शोध संगठनों एवं संस्थाओं तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानों और उपक्रमों के

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2022

शोध एवं विकास हेतु विभागीय पुस्तकालयों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। अनुसंधान की दृष्टि से कोई भी पुस्तकालय उपादेय सिद्ध हो सकता है। मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्रों से संबंधित अनुसंधानपरक गतिविधियों में सार्वजनिक पुस्तकालयों की भूमिका भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

सांस्कृतिक गतिविधियों में पुस्तकालय का योगदान

पुस्तकालय का प्रथम सांस्कृतिक योगदान यह होता है कि यह मानव जाति की सांस्कृतिक धरोहर एवं उपलब्धियों को सुरक्षित रखता है जो वस्तुतः पुस्तकों तथा अन्य प्रलेखों में निहित होती हैं। पुस्तकालय की सांस्कृतिक भूमिका दो अन्य दृष्टिकोणों से भी महत्वपूर्ण होती है। इसे उन पुस्तकों को सुलभ कराना चाहिए जो लोगों की सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध होती हैं ओर उनके सोन्दर्य बोध और मूल्यांकन की क्षमता को विकसित करती हैं। इसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन करना चाहिए–जैसे, संगीत समारोह, नृत्य, नाटक, चित्रकला, प्रतियोगिता, चित्रकला प्रदर्शनी, इत्यादि और समुदाय के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध और सशक्त बनाते रहना चाहिए। वस्तुतः ऐसे कार्यक्रम मुख्यतः सार्वजनिक पुस्तकालयों के कार्यक्षेत्र में आते हैं। इनका आयोजन करना ऐसे पुस्तकालयों की उपादेयता को बढ़ाता है।

सूचना प्रसार में पुस्तकालय का योगदान

अपने पुस्तक–संग्रह के माध्यम से पुस्तकालय ज्ञान एवं सूचना के विशाल भण्डार का निर्माण करते हैं। सामाजिक प्रगति को सुनिश्चित करने वाले किसी भी मानवीय क्रियाकलाप की सफलता के लिए सूचना एक आवश्यक उपादान ओर संसाधन है। शोधार्थी, शिक्षक, छात्र, प्रशासक, औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रबन्ध, शिल्पी, उद्यमी, कृषक, कारखानों एवं खेतों में काम करने वाले श्रमिक, इत्यादि सभी को सूचना की आवश्यकता होती है जिससे वे अपने व्यवसाय में सफलता पाने के लिए अपने को अत्यधिक सक्षम बना सकें। पुस्तकालय का प्रमुख सूचनात्मक योगदान उपयुक्त विधियों से सूचनाप्रद् सामग्री का संग्रह करना होता है। इसीलिए पुस्तकालय को सूचना केन्द्र की संज्ञा भी दी जाती है। पुस्तकालय की सूचनात्मक भूमिका इसलिए भी होती है कि लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकता के लिए भी सूचना की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति पुस्तकालय करता है। पुस्तकालय अपने पुस्तक–संग्रह में रोजगार चयन से सम्बन्धित पुस्तकें भी रख सकते हैं और इस प्रकार उन पाठकों की सहायता कर सकते हैं जो किसी विशेष क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करने के इच्छुक हैं। किसी प्रकार के उद्यम को करने के लिए किस प्रकार की जानकारी चाहिए अथवा कोई रोजगार केसे प्राप्त करें या केसे प्रारम्भ करें, इत्यादि की सूचनाप्रद सामग्री को भी पुस्तकालय सुलभ कराते हैं। संक्षेप में, पुस्तकालय को इस प्रकार

से सुसज्जित एवं व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि यह समुदाय के सदस्यों की वर्तमान तथा संभावित मांग से संबंधित सूचना उपलब्ध करा सकें।

धार्मिक संस्थाओं में पुस्तकालय का योगदान

पुस्तकों को सामान्यतः तीन श्रेणियों में विभकत किया जा सकता है– सूचनात्मक पुस्तकें, मनोरंजनात्मक पुस्तकें, तथा प्रेरणात्मक पुस्तकें। प्रेरणाप्रद् पुस्तकों के अंतर्गत आने वाली पुस्तकें हैं : आध्यात्मिक और धार्मिक पुस्तकें, सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों एवं विचारधाराओं का प्रतिपादन करने वाली पुस्तकें, तथा अन्य शाश्वत मूल्यों की पुस्तकें जिन्हें हम क्लासिक्स कहते हैं। इनसे अध्येताओं की आध्यात्मिक, धार्मिक तथा वैचारिक एवं नैतिक पिपासा शांत होती है। प्रत्येक पुस्तकालय में इस प्रकार की पुस्तकों आधुनिक समाज में पुस्तकालयों का प्रतिनिधित्व करने वाले संकलन को अवश्य रखना चाहिए जिससे लोगों को उच्च आदर्शों हेतु प्रेरित एवं सूचना कन्द्रों कौ भूमिका किया जा सके और उनके मस्तिष्क में मूल्यों का संचार हो सके।

मनोरंजन में पुस्तकालय का योगदान

किसी भी समुदाय के सदस्यों द्वारा फुर्सत या अवकाश के समय का स्वस्थ सदुपयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है। ऐसा होने से समुदाय के सदस्यों को अवकाश के समय में नकारात्मक एवं विध्वंसकारी गतिविधियों में लिप्त होने से बचाया जा सकता है। पुस्तकालयों द्वारा उपयोक्ताओं की मनोरंजनपरक आवश्यकताओं की तुष्टि भी को जानी चाहिए तथा इसके लिए उपयुक्त पुस्तकों की व्यवस्था की जानी चाहिए। उपन्यास, विभिन्न कलाओं से संबंधित कृतियाँ, भ्रमण–साहित्य, जीवनियाँ, लोकप्रिय पत्रिकाएँ, मनोरंजनपरक साहित्य की श्रेणी में आते हें। प्रत्येक पुस्तकालय के प्रलेख–संग्रह में ऐसे साहित्य का प्रचुर संग्रह होना चाहिए। इसके अतिरिक्त पुस्तकालयों में, विशेषतः सार्वजनिक पुस्तकालयों में, स्वस्थ मनोरंजन एवं मनोविनोद के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए–जैसे, संगीत समारोहों और निष्पादन कलाओं इत्यादि का आयोजन।

ज्ञान का विकेन्द्रीकरण करना

संग्रहित तथा संगठित सामग्री के उचित उपयोग में आवश्यक बौद्धिक एवं अन्य प्रकार की सहायता प्रदान करना जिससे ज्ञान का प्रचार तथा प्रसार निरन्तर होता रहे। ज्ञान का विकेन्द्रीकरण करना संग्रहित तथा संगठित सामग्री के उचित उपयोग में आवश्यक बौद्धिक एवं अन्य प्रकार की सहायता प्रदान करना जिससे ज्ञान का प्रचार तथा प्रसार निरन्तर होता रहे।

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2022

वर्तमान ज्ञान के प्रवाह के हमेशा गतिशील रखने में मदद करना ज्ञान की खोज समय की एक आवश्यकता हैं तथा खोज के बाद उसके विकास के लिए उसका संरक्षण तथा विकेन्द्रीकरण जरूरी हैं। अतः पुस्तकालय ज्ञान के सामाजिक विकास के लिए जरूरी साधन प्रदान कर विश्व ज्ञान में वृद्धि करने में सहायक हैं।

देश को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध करना

विभिन्न उद्योगों तथा व्यवस्थों में कार्यरत व्यक्तियों का यथा समय सम्बन्धित विषयों में नवीनतम विचार प्रकृति और साहित्य से अवगतकराकर पुस्तकालय सम्बन्धित कर्मचारियों में सृजन शक्ति का संचार करता हैं।

शोध शक्ति का संरक्षण करना

सार्वजानिक कल्याण के लिए शोध शक्ति का संरक्षण सदुपयोग और समृद्धि जरूरी हैं। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा एकता पुस्तकालयों द्वारा पारस्परिक सहयोग तथा सदभावनाए राष्ट्रीय एकता, अन्तर्राष्ट्रीय शांन्ति एवं सहयोग की भावना को अपने पाठकों के मध्य सफलतापूर्वक तथा आसानी से प्रसारित किया जा सकता हैं।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने विश्वविद्यालय के उद्देश्यों को 1947 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आयोजित दीक्षान्त समारोह में बताया। विश्वविद्यालय का अस्तित्व मानववाद सहिष्णुता ओर विवेक विचारगत साहस तथा सत्य की खोज के लिए होता हैं। उसका लक्ष्य होता है कि मानव जाति और भी उच्चतर उद्देश्यों की और कदम बढ़ाएं। राष्ट्र और जनता का श्रेय इसी में है कि विश्वविद्यालय अपने दायित्वों का समुचित निर्वाह करे।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948—49) ने अपने प्रतिवेदन में विश्वविद्यालय के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए लिखा हैं। आज के बालक, बालिकाएँ कल के नागरिक हैं। नवयुवकों की शिक्षा एवं नवीन सत्य का शुभारंभ करना विश्वविद्यालय का प्रमुख कर्त्तव्य होता हैं।

डी.एस कोठारी की अध्यक्षता में गठित शिक्षा आयोग (1984—68) ने भी विश्वविद्यालय के उद्देश्यों की व्याख्या की है। सम्पूर्ण उत्साह के साथ निर्मिक होकर सत्य के अन्वेषण में समर्पित होते हुए आवश्यकताओं के अनुरूप नवीन ज्ञान की प्राप्ति एवं निर्माण करते हुए प्राचीन ज्ञान और विश्वासों की व्याख्या करना हैं। शंकर दयाल शर्मा' ने 1987 में आगरा विश्वविद्यालय आगरा के छठे दीक्षान्त समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा। विश्वविद्यालय शिक्षा का सबसे बडा उद्देश्य छात्रों में सहृदयता और

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2022

विनम्रता की भावना जगाना और उन्हें सदैव जिज्ञासु बनाए रखना हैं। समी शिक्षकों का उद्देश्य एक स्वस्थ शरीर में एक स्वस्थ मस्तिष्क का विकास करना हैं। पस्तकालय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक जीवित एजेंसी हैं। यशपाल पूर्व चौयरमैन यू जी.सी इनक्लिबनेट की रिपोर्ट के बारे में इस बात पर जोर दिया कि पुस्तकालय की भूमिका और सूचना का विकास अब तेजी से हो रहा हैं। पूरी दुनिया में पुस्तकालय की योजना के महत्त्व की अपनी जगह हैं। इसमें कोई शक नहीं कि जब विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के पुस्तकालयों को सुविधाएँ प्रदान नहीं करवाई गई तो इसका खामियाजा पूरे देश को भुगतना पड़ेगा। किसी भी देश की शैक्षणिक गुणवत्ता पुस्तकालय द्वारा प्रदान की गई सेवाओं पर निर्भर करती हैं। उपर्युक्त उद्देश्यों से स्पष्ट होता हैं कि विश्वविद्यालयी शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का सर्वार्गिक विकास होता हैं जिसमें मनष्य के साथ साथ समाज, समुदाय, संस्कृति एवं राष्ट्र भी शामिल हैं। विश्वविद्यालय का राष्ट्रीय कल्याण शक्ति एवं जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान है लेकिन वह इस भूमिका का पूर्ण रूपेहण निर्वाह तमी कर सकता हैं। उसके जीवन में कुछ आधारभूत मूल्यों के प्रति सामाजिक धन का व्यवस्थित उपयोग एवं समाज के सदस्य का उन्नत एवं परिपूर्ण सेवाएं प्रदान करना पुस्तकालय का सर्वोपरि उद्देश्य हैं। अतः पुस्तकालयों की व्यवस्था प्रशासन के आधुनिक सिद्धान्तों के रूप में होनी आवश्यक हैं। पुस्तकालय विश्वविद्यालय संगठन का अभिन्न अंग होता हैं। उसे विश्वविद्यालयी के निर्धारित उद्देश्यों, कार्यो, नियमों अधिनियमों एवं नीतियों के अन्तर्गत कार्य करना होता हैं।

शोध और विकास में पुस्तकालयों का योगदान

शोध आज एक सामाजिक आवश्यकता हैं क्योंकि सतत वृद्धिशील जनसंख्या और उसके उच्च स्तरीय जीवनयापन के लिए अधिकाधिक और नई सामग्री की आवयकता पड़ती हैं जिसकी पूर्ति नित्य नवीन अविष्कारों द्वारा ही संभव हैं। अतः किसी भी देश की प्रगति शोध पर निर्भर करती है। इसी कारण प्रत्येक विकसित और विकासशील देश में शोधकार्य की होड़ लगी हुई हैं। आज प्रत्येक देश अपने आर्थिक स्रोतों का काफी अंश शोध कार्य पर व्यय करता हैं। यह कहा जा सकता है कि शोध आधुनिक समाज का जीवन प्राण हैं क्योंकि हमारा आर्थिक जीवन स्तर हमारी संस्कृति और हमारी प्रगति सब शोघ पर ही आधारित हैं। शोध ज्ञान को खोजने विकसित करने और स्थापित करने का सशक्त प्रयास हैं। यह एक बौद्धिक क्रिया हैं जो प्रश्न पूछने से आरंम्भ होती हैं। शोध के द्वारा नवीन ज्ञान की प्राप्ति, बुद्धि विद्यमान ज्ञान का पुनः परीक्षण तथा शुद्धिकरण करके उसे नवीन परिस्थितियों के अनुकूल बनाया जाता हैं। अतः पुस्तकालयों के प्रबन्ध में वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग नितान्त आवश्यक हो गया हैं।

सुचना संचार प्रौद्योगिकी और पुस्तकालय

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2022

सभी कम्प्यूटर के महत्त्व से भली भाँति परिचित हैं। संचार प्रौद्योगिकी के साथ मिलकर यह सूचना संचार प्रौद्योगिकी के रूप में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में और अधिक उपयोगी और प्रमावकारी हैं। वस्तुतः पुस्तकालय तथा इसकी सेवाओं पर सूचना संचार में प्रौद्योगिकी का व्यापक प्रभाव देखा जा सकता हैं जो कि पुस्तकालय स्वचालन से लेकर पुस्तकालय नेटवर्क तक व्यापक हो सकता हैं। यह इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकालय से लेकर डिजिटल पुस्तकालय के स्वरूप में भी समझा जा सकता हैं। परम्परागत पुस्तकालय डिजिटल पुस्तकालयों की ओर पारंपरिक पुस्तकालय अभी भी काफी हद तक मुद्रित सामग्री को संजोये हुए हैं। परम्परागत पुस्तकालय के भौतिक संग्रह से युक्त वातावरण में उपमोक्ता के लिए यह आवश्यक हैं कि पाठक पुस्तकालय में आएँ और उस प्रलेख का उपयोग करने के लिए वह उसे प्राप्त करें। इसके अलावा किसी भौतिक प्रलेख का एक ही समय में केवल एक ही उपभोक्ता उपयोग कर सकता हैं जबकि पूरी तरह से स्वचालित पुस्तकालय में भी पुस्तकालय ओपेक का प्राथमिक उद्देश्य किसी प्रलेख की भौतिक अविस्थिति का संकेत देना ही होता हैं। डिजिटल पुस्तकालय उन भौतिक अवरोधों को समाप्त कर देता हैं जो पुस्तकालय में होते हैं। साथ ही बहुअधिगम बहुविधि की सूचियों तथा अपने संग्रह का इलेक्ट्रॉनिक सम्प्रेषण भी करता हैं। 21वीं सदी में इंटरनेट के उपयोग में वृद्धि हुई जिस ने पुस्तकालयों को भी काफी प्रभावित किया यही कारण है कि धीरे–धीरे परम्परागत पुस्तकालय डिजिटल पुस्तकालयों की ओर बढ़ रहे हैं।

डिजिटल पुस्कालय

किलफोर्ड, लिंच 19945 यह उपयोक्ताओं के समाज को डिजिटल सूचना एवं ज्ञान के विशाल तथा व्यवस्थित संग्रहालय तक सुस्पष्ट अधिगम प्रदान करने वाली पद्धति है। डिजिटल पुस्तकालय एक एकल इकाई नहीं हैं बल्कि यह कई संग्रह के संसाधन प्रौद्योगिकी को जोड़ने वाला हैं। डिजिटल पुस्तकालय संग्रह दस्तावेज ग्रंथ सूची रिकॉर्ड करने के लिए सीमित नहीं हैं। वे वास्तविक डिजिटल वस्तुओं जैसे छवियाँ, ग्रंथों आदि का विकास कर रहे हैं डिजिटल पुस्तकालय दुनिया के पुस्तकालय और सूचना पेशेवरों के लिए सूचना आदान प्रदान का माध्यम बन गए हैं। डिजिटल पुस्तकालय पारंपरिक पुस्तकालयों से काफी अलग हैं क्योंकि डिजिटल पुस्तकालयों में ऑडियो, वीडियो और मल्टी मीडिया सामग्री पाठकों तक पहुँचाई जाती हैं। डिजिटल पुस्तकालय में कागज की जरूरत नहीं होती हैं। डिजिटल पुस्तकालय कई विषयों और विशेषज्ञों के साथ अलग पृष्ठभूमि मिन्न दृष्टिकोण व पहलुओं को एक साथ लाने का प्रयास हैं। यह प्रकाशन और पुस्तकालयों में होने वालें परिवर्तन का विश्लेषण करता हैं। डिजिटल पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को आसानी से पूरा करते हैं व उन्नत जानकारी को

सांझा कर रहे हैं। विल्थिम, आर्म्स० सम्बद्ध सेवाओं सहित सूचना का व्यवस्थित संग्रह, जहां सूचना डिजिटल रूप में भंडारित होती है तथा नेटवर्क पर अधिगम्य होती हैं।

संदर्भ

- स्वेन, दिलीप एवं पाण्डे के।सी। (2010) ।भारतीय राज्य के बिजनेस स्कूल के पुस्तकालयों में ई–संसाधनों का उपयोग इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी जर्नल वॉल्यूम 27, (1) 2010 पृ।सं। 75–85 ।
- पाटिल, डी।वी एवं परमेश्वर (2009)। गुलवर्ग विश्वविद्यालय में संकाय सदस्यों और अनुसंधान विद्वानों द्वारा एसआरइ' एल एस जर्नल वॉल्यूम 46,(1), 2009 पृ। सं। 51–60 ।
- सुदामा, हरिदर्शन (2009)। नॉसडाक पुस्तकालय भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान में डॉक्यूमेंटेंशन सेंटर में सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा ई–संसाधनों के उपयोग का प्रभाव जर्नन इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी वॉल्यूम 27, (1), 2009 पृ।सं। 118–128 ।
- अरोरा। (2003)। पुस्तकालय और सूचना सेवाएँ।
- कुमार गुलशन। (2019)। पुस्तकालय का इतिहास।
- रे, लेस्डेस एवं आर्मस्ट्रांग, क्रिस (2006)। यू के। क्रिस आर्मस्ट्रांग विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में सूचना साक्षरता की भूमिका का सर्मथन। जर्नल केलपरो बुलेटिन वॉल्यूम 58, (6), पृ।सं। 39––69 ।
- मोहम्मद, हनीफा कश्मीर। (2005)। केरल के विशेष पुस्तकालयों में ई–संसाधनों की जानकारी। केलपरो बुलेटिनः वॉल्यूम 91, (2) 2005 पृ।सं। 53–58 ।
- गुप्ताभाग्रव। (2015)। पुस्तकालय की वर्तमान दशा–व्यवस्था।
- चन्द्र डॉ विकास। (2018)। पुस्तकालय सूचना सेवाओं के प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका।
- पाल, ए। माण्डा। (2005)। तंजनिया में अकादमी संस्थाओं में शैक्षिक एवं अनुसंधान कार्यो में ई–संसाधनों का उपयोग। इफॉर्यनेशन जेवल्पयेन्ट जर्नलः वॉल्यूम 21, 2005 पृ।सं। 269––283 ।
- अली, नौशद ।(2005)। आई–आई टी दिल्ली पुस्तकालय में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का प्रयोग। आई ए एस आई सी बुलेटिन वॉल्यूम 48, (2), पृ।सं। 72–81 ।
- चौखण्डे, वैशाली एवं कुमार, रमेश (2004) अमरावती विश्वविद्यालय में संकाय सदस्यों के पैटर्न का उपयोगः आर एल ए बुलेटिन वॉल्यूम 40(3) पृ।सं। 23–33